भारत - सूडान संबंध

भारत और सूडान के बीच नील एवं सिंधु घाटी की सभ्यताओं के समय से चले आ रहे हैं। मैसोपोटैमिया के माध्यम से लगभग 5000 साल पहले संपर्क और संभवत: व्यापार संबंध के साक्ष्य हैं।

1935 में, महात्मा गांधी जी इंग्लैंड जाते समय रास्ते में सूडान बंदरगाह पर रूके थे जहां भारतीय समुदाय के सदस्यों द्वारा उनका स्वागत किया गया था। 1938 में, पंडित जवाहरलाल नेहरू भी ब्रिटेन जाते समय रास्ते में सूडान बंदरगाह पर रूके थे तथा भारतीय कारोबारी छोटालाल सामजी विरानी के घर पर एक स्वागत समारोह में भाग लिया था। सूडान की ग्रेजुएट्स जनरल कांग्रेस का गठन 1938 में हुआ जो बहुत हद तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अनुभव पर आधारित थी।

ब्रिटिश भारतीय सेना ने 1941 में इरीट्रिया में सूडान के अपने समकक्षों के साथ युद्ध लड़ा तथा केरेन का निर्णायक युद्ध जीता था (बंगाल सैपर ने मिटेम्मा में जो अब सूडान - इथोपिया सीमा पर है, बारूदी सुरंग हटाने के लिए विक्टोरिया क्रास जीता था)। 1953 में सूडान में पहला संसदीय चुनाव भारत के तत्कालीन मुख्य निर्वाचन आयुक्त की सुकुमार सेन द्वारा संचालित किया गया (1957 में गठित सूडानी निर्वाचन आयोग ने भारतीय निर्वाचन मानदंडों एवं कानूनों का भरपूर सहारा लिया है)।

ब्रिटेन के अधिकारियों को प्रतिस्थापित करने के लिए फरवरी 1954 में स्थापित सूडानीकरण समिति ने भारत की बजटीय सहायता से अप्रैल 1995 में क्षतिपूर्ति का भुगतान करने के अपने कार्य को पूरा किया था। भारत द्वारा 1955 में खारतूम में एक राजनयिक राजनयिक मिशन खोला गया। ब्रिटिश अधिकारियों को प्रतिस्थापित करने के लिए फरवरी, 1954 में स्थापित सूडानी समिति ने क्षतिपूर्ति के भुगतान के लिए भारत की बजटीय सहायता से अप्रैल, 1955 में अपना कार्य समाप्त किया। भारत द्वारा 1955 में खारतूम में एक राजनयिक प्रतिनिधि कार्यालय खोला गया।

1955 के बांडुंग सम्मेलन में, अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के लिए सूडान के शिष्टमंडल के पास अपना ध्वज नहीं था क्योंकि तब सूडान स्वतंत्र नहीं था। अपना रूमाल बाहर निकालकर पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उस पर "सूडान" लिया और इस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में सूडान के लिए स्थान सुरक्षित किया।

सूडान और भारत के बीच संबंध मधुर एवं मैत्रीपूर्ण है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उत्तर अफ्रीकी अभियान में सूडान की आजादी में भारतीय सैनिकों के बलिदान का आभार प्रकट करते हुए सूडान सरकार की ओर से एक सौ हजार पाउंड के वित्त पोषण से भारत की राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में सूडान ब्लॉक का गठन किया गया। 1958 में, सूडान के दूतावास एवं आवास के लिए नई दिल्ली के पॉश चाणक्यपुरी इलाके में नाममात्र की कीमत पर भारत ने 6 एकड़ के भूंखंड की पेशकश की।

1993 एवं 1994 में भारत ने सूडान की आलोचना करने वाले यूएन संकल्पों के विरूद्ध मतदान किया तथा आई एम एफ से अनिवार्य रूप से सूडान को हटाने के लिए 1994 में प्रस्ताव का विरोध किया। सूडान के 15वें स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर 31 दिसंबर, 2005 को अपने संबोधन में राष्ट्रपति बशीर ने भारत के साथ सूडान के मजबूत संबंधों का विशेष रूप से उल्लेख किया। विभिन्न क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मंचो में दोनों देशों के बीच मजबूत राजनीतिक संबंध आज भी बने हुए हैं। भारत ने हेगलिग हमले की पृष्ठभूमि में यूएन में सूडान का समर्थन किया।

द्विपक्षीय यात्राएं :

दोनों देशों के बीच उच्च स्तर पर यात्राएं होती रहती है। प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सूडान की आजादी के शीघ्र बाद जुलाई, 1957 में सूडान का दौरा किया। अप्रैल, 1963 में उप राष्ट्रपति डा. जाकिर हुसैन ने खारतूम का दौरा किया तथा दिसंबर 1975 में राष्ट्रपति फकरूद्दीन अली अहमद ने सूडान का दौरा किया। राष्ट्रपति डा. ए पी जे अब्दुल कलाम ने 20 से 22 अक्टूबर, 2003 के दौरान सूडान का राजकीय दौरा किया, जो 28 साल बाद राष्ट्रपति के स्तर पर सूडान की यात्रा थी। राष्ट्रपति बशीर से मुलाकात करने के अलावा राष्ट्रपति जी ने सूडान की संसद को संबोधित किया तथा खारतूम विश्वविद्यालय में व्याख्यान दिया।

सूडान की ओर से, अंतरिम सरकार के प्रधानमंत्री श्री इस्माइल अल अजहरी ने 1955 में और फिर 1967 में सूडान के राष्ट्रपति के रूप में भारत का दौरा किया। राष्ट्रपति इब्राहिम अब्बौद ने 1964 में भारत का दौरा किया तथा जाफर निमीरी ने 1974 में भारत का राजकीय दौरा किया। राष्ट्रपति उमर हुसैन अहमद अल बशीर जुलाई, 1999 में और फिर जुलाई, 2002 में भारत से होते हुए गुजरे थे। भारत की अपनी अब तक की पहली यात्रा में, राष्ट्रपति बशीर ने 29 और 30 अक्टूबर, 2015 को नई दिल्ली में भारत - अफ्रीका मंच की तीसरी शिखर बैठक में भाग लिया। शिखर बैठक के दौरान अतिरिक्त समय में सूडान के शिष्टमंडल ने भारत के नेतृत्व के साथ द्विपक्षीय चर्चा का भी आयोजन किया।

उच्च स्तर पर यात्राओं के अलावा, मंत्री स्तर पर दोनों देशों के बीच यात्राएं नियमित रूप से होती हैं। हाल ही में विदेश मंत्री ने फरवरी, 2014 में सूडान का आधिकारिक दौरा किया था।

भारत - सूडान संयुक्त मंत्री स्तरीय आयोग

1995 में गठित भारत - सूडान संयुक्त समिति को जून, 1997 में संयुक्त मंत्री स्तरीय आयोग (जे एम सी) के रूप में स्तरोन्नत किया गया। वर्ष 1997 में नई दिल्ली में जे एम सी की पहली बैठक हुई और फिर वर्ष 2000 में खारतूम में इसकी बैठक हुई। वर्ष 2016 की पहली तिमाही में विदेश राज्य मंत्रियों के स्तर पर नई दिल्ली में तीसरी जे सी एम का आयोजन किया किया जाएगा।

भारत - सूडान विदेश कार्यालय परामर्श

दोनों देशों के विदेश कार्यालयों के बीच पहली बैठक सितंबर, 2000 में खारतूम में हुई थी। भारत - सूडान विदेश कार्यालय परामर्श की 6वीं बैठक 11 दिसंबर, 2014 को नई दिल्ली में हुई थी।

भारत और सूडान के बीच करार

भारत और सूडान के बीच कमोवेश 30 द्विपक्षीय करार हैं जिसके तहत व्यापार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, मीडिया, संस्कृति, परामर्श, व्यवसाय, लघु उद्योग, कानूनी मामले, हवाई सेवा, कृषि आदि जैसे क्षेत्र शामिल हैं।

आर्थिक एवं वाणिज्यिक संबंध

वित्त वर्ष	द्विपक्षीय व्यापार (मिलियन अमरीकी डालर)		
	भारत का निर्यात	भारत का आयात	कुल व्यापार
2005-06	294.65	32.62	327.27
2006-07	403.49	89.08	492.57
2007-08	407.51	433.14	840.65
2008-09	485.07	415.53	900.60
2009-10	461.06	475.00	936.06
2010-11	488.46	613.78	1102.24
2011-12	717.37	438.18	1155.55
2012-13	754.94	133.34	888.28
2013-14	862.17	436.19	1298.36
2014-15	882.47	569.66	1452.13

स्रोत : वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत

भारत चीन के बाद भारत सूडान को निर्यात करने वाला दूसरा सबसे बड़ा देश है। भारत मुख्य रूप से चीनी एवं कंफेक्शनरी, रसायन एवं भेषज पदार्थ, मशीनरी एवं उपकरण, परिवहन उपकरण, लोहा एवं इस्पात, विनिर्मित माल, टेक्सटाइल एवं परिधान, खाद्य सामग्री आदि की बिक्री करता है तथा भारत मुख्य रूप से खनिज एवं ईंधन, कच्ची खाल एवं त्वचा, कृषि उत्पाद, लेदर, मेटल एवं उपस्करण आदि खरीदता है।

सूडान में भारतीय कंपनियां

आज सूडान में अनेक भारतीय कंपनियां सक्रिय हैं जिनमें ओ एन जी सी विदेश लिमिटेड, भेल, टी सी आई एल, प्रोग्रेसिव कंस्ट्रक्शन लि., महिंद्रा एवं महिंद्रा, टाटा मोटर्स, बजाज आटो आदि प्रमुख हैं तथा अपोलो, एम आई ओ टी, मैक्स, नारायणा हृदयालय आदि जैसे विभिन्न अस्पतालों का भी अपने एजेंटों के माध्यम से प्रतिनिधित्व है।

परियोजनाएं तथा ऋण सहायता

अप्रैल, 2006 में, भारत गैर परंपरागत ऊर्जा स्रोत मंत्रालय ने खारतूक से लगभग दो घंटे की दूरी पर स्थित खादराब गांव के लिए एक सौर विद्युतीकरण प्रणाली (जिसे सेंट्रल इलेक्ट्रानिक्स लिमिटेड

द्वारा कार्यान्वित किया गया) को वित्त पोषित किया, जिससे कोई 1500 ग्रामीणों के जीवन में पहली बार लाइट आई। इस परियोजना को अनेक अन्य गांवों में भी दोहराया गया है।

वर्ष 1980 से सूडान सरकार की अनेक ऋण सहायता प्रदान की गई है। भारत सरकार द्वारा सूडान सरकार को विभिन्न क्षेत्रों में लगभग 737.07 मिलियन अमरीकी डालर मूल्य की कुल ऋण सहायता प्रदान की गई है, जैसे कि - भारत से सूडान को विद्युतीकरण, उपकरण, फोटोवाल्टिक सेल, डीजल कोच, कापर रॉड, टेक्सटाइल मशीनरी की आपूर्ति एवं लोकोमोटिव के पुनर्वास के लिए 50 मिलियन अमरीकी डालर, सिन्जा - गेडारिफ पारेषण एवं उप केंद्र परियोजना के लिए 41.9 मिलियन अमरीकी डालर, कोस्टी, में 125 मेगावाट के चार संयुक्त चक्र विद्युत संयंत्र के लिए 2006 में 350 मिलियन अमरीकी डालर, कृषि इनपुट, तकनीकी एवं प्रयोगशाल उपकरण, वैज्ञानिक उपकरण की आपूर्ति, सौर विद्युतीकरण तथा सूडान रेलवे के लिए क्रमश: 15, 15, 03, 05, एवं 10 मिलियन अमरीकी डालर , सिन्जा - गेडारिफ पारेषण लाइन, लघु औद्योगिक परियोजनाओं तथा पशुधन उत्पादन एवं सेवा विकास के लिए क्रमश: 25, 10 एवं 17 मिलियन अमरीकी डालर, सफेद नील राज्य में मुशकोर चीनी संयंत्र के लिए 150 मिलियन अमरीकी डालर तथा सभी ऋण सहायता पार बकाया व्याज के पूंजीकरण के लिए 45.17 मिलियन अमरीकी डालर।

आई टी ई सी तथा क्षमता निर्माण के अन्य उपाय

भारत सरकार द्वारा पूर्णत: वित्त पोषित भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (आई टी ई सी) कार्यक्रम के तहत हर साल 150 स्लॉट की पेशकश अल्पाविधक पाठ्यक्रमों के लिए की जाती है। वर्ष 2015-16 के लिए, सूडान के 120 से अधिक नागरिक आबंटित स्लॉटों के विरूद्ध भारतीय प्रशिक्षण संस्थानों में विभिन्न पाठ्यक्रमों में पहले ही शामिल हो चुके हैं। भारत - अफ्रीका मंच शिखर बैठक (आई ए एफ एस)-II के तहत प्रदान किए जा रहे अल्पावधिक पाठ्यक्रमों से भी भारी संख्या में सूडान के नागरिक लाभ उठा रहे हैं। सूडान के राजनयिक भी नई दिल्ली स्थित विदेश मंत्रालय द्वारा आयोजित विदेशी राजनयिकों के लिए पेशेवर पाठ्यक्रम (पी सी एफ डी) में भी भाग लेते हैं।

सांस्कृतिक संबंध :

सूडान से एक 18 सदस्यीय लोक कला संगीत एवं नृत्य मंडली ने मार्च, 2002 में भारत का दौरा किया तथा आई सी सी आर की प्रायोजकता में दिसंबर, 2005 में एक 28 सदस्यीय आधुनिक संगीत मंडली ने दौरा किया। मई, 2006 में, श्री अखिल बक्शी के नेतृत्व में एक 9 सदस्यीय भारतीय अंतर्राष्ट्रीय गोंडवाना भूमि अभियान दल ने महिंद्रा स्कार्पियो में सड़क मार्ग से 17 देशों की 25,000 किमी की अपनी सद्भावना यात्रा के अंग के रूप में सूडान में 5 दिन बिताए।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा प्रायोजित 5 सदस्यीय मंडली ने श्रीमती सोनल मानसिंह के नेतृत्व में नवंबर 2016 में सूडान का दौरा किया। नवंबर, 2007 में, श्रीमती जयलक्ष्मी ईश्वर के नेतृत्व में एक 11 सदस्यीय भरतनाट्यम मंडली की यात्रा को आई सी सी आर द्वारा प्रायोजित

किया गया। नवंबर, 2008 में, आई सी सी आर द्वारा एक "पायनियर्स ऑफ क्वेपम'' को भेजा गया, जो गोवा का एक लोकगीत एवं नृत्य संपरिधान है। हाल ही में, 10 से 15 नवंबर 2015 के दौरान, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा प्रायोजित एक 12 सदस्यीय पंजाबी लोक नृत्य 'भांगड़ा एवं गिद्दा' ग्रुप ने सूडान का दौरा किया तथा खारतूम एवं सूडान के पत्तन शहरों में अपनी कला का प्रदर्शन किया। इसके अलावा, अगस्त 2007 में सूडान तेल दिवस (31 अगस्त) के अवसर पर ओ एन जी सी द्वारा प्रायोजित मुंबई आधारित रंग फुहार गीत एवं नृत्य मंडली ने खारतूम एवं जुबा में अपनी कला का प्रदर्शन किया।

भारी संख्या में सूडान के नागरिकों ने शिक्षा के लिए अपने मनपसंद डेस्टिनेशन के रूप में भारत को चुना है। सूडान के छात्रों में पुणे, हैदराबाद, दिल्ली, मुंबई, बंगलौर एवं अलीगढ़ परंपरागत रूप से लोकप्रिय केंद्र रहे हैं।

भारतीय समुदाय

पास्टोरल बेजा, जिनका सूडान की आबादी में अनुपात लगभग 5 प्रतिशत है, हैमिटिक लोग हैं जो सूडान के सबसे पुराने समूहों में से एक हैं। अपने घुंघराले बालों के लिए "फुजी वुजी'' के रूप में रूडयार्ड किपलिंग द्वारा उनकी जंगी भावना के लिए अमर किए गए बेजा दावा करते हैं कि वे भारतीय मूल के हैं। ओंठों के बजाय हृदय से बोली जाने वाली उनकी भाषा का संबंध प्राचीन प्राकृत से हो सकता है।

सूडान में लगभग 3000 भारतीयों (हाल की अवधि में यह संख्या निरंतर घट रही है) में से सूडान में बसा भारतीय समुदाय (अब लगभग 1500) लगभग 150 वर्ष पुराना है, जो भारतीय समुदाय वहां बस गया है उसके अलावा सूडान में एक बड़ी प्रवासी आबादी है। वे सूडान की अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्रों में पेशेवर के रूप में काम कर रहे हैं। यूएन के अन्य संगठनों के अलावा डारफर एवं अबेयेई में संयुकत राष्ट्र मिशनों में कुछ भारतीय सिविलियन अधिकारी काम कर रहे हैं।

ऐसा माना जाता है कि 1860 के दशक के पूर्वार्ध में लवचंद अमरचंद शाह नामक पहले भारतीय, जो एक गुजराती व्यापारी थे तथा भारत से माल का आयात करते थे, अडेन से सूडान गए हैं। ऐसा माना जाता है कि 1860 के दशक के पूर्वार्ध में लवचंद अमरचंद शाह नामक पहले भारतीय, जो एक गुजराती व्यापारी थे तथा भारत से माल का आयात करते थे, अडेन से सूडान गए हैं। इस तरह सूडान में भारतीय समुदाय बढ़ा एवं विकसित हुआ।

देश के पूर्वी भाग में छोटे कस्बों (पोर्ट सूडान और सुवाकिन) से शुरूआती भारतीय पथ-प्रदर्शक देश के भीतरी भागों में चले गए तथा ओमडुरमन, कसाला, गेडारेफ एवं वाड मेदनी में बस गए। 1970 के दशक तक पोर्ट सूडान में हमारा मानद कांसुलेट हुआ करता था।

उपयोगी संसाधन :

भारतीय दूतावास, खारतूम वेबपेज :
www. eoikhartoum.in

भारतीय दूतावास, खारतूम का फेसबुक पेज :
https://www.facebook.com/Indianembassykhartoum

***

फरवरी, 2016